

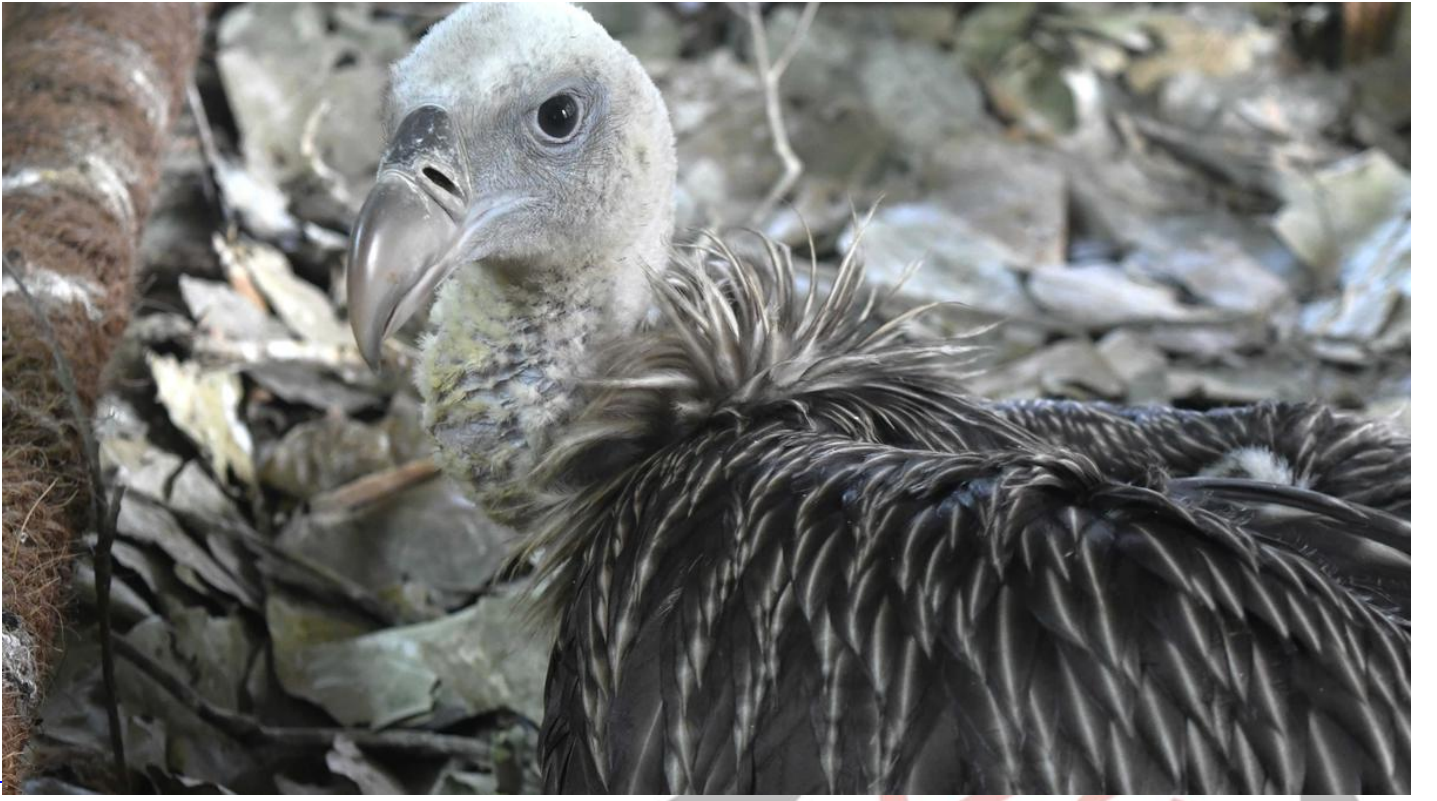
हमिलयी गदिध: जपिस हमिलयेंससि

हाल ही में गुवाहाटी में असम राज्य चड्डियाघर ने भारत में पहली बार कैद में दुर्गराह्य हमिलयी गदिध (जपिस हमिलयेंससि) का सफलतापूर्वक प्रजनन कराकर एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है।

- इसके अतिरिक्त केटोप्रोफेन और एसकिलोफेनाक के वरिचन, वकिरय और वतिरण पर रोक लगाने के केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के निर्णय ने गदिध संरक्षणवादियों और वशिषज्जों में एक उम्मीद जगाई है।

हमिलयी गदिध के वषिय में :




- संरक्षण की स्थिति:
 - अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ (International Union for Conservation of Nature-IUCN) की लाल सूची (रेड लिस्ट): संकटग्रस्त प्रजाति
 - वन्यजीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES): परशिष्ट II
- वशिषताएँ:
 - वशिष के प्राचीनतम एवं सबसे बड़ी गदिध प्रजातियों में से एक हमिलयी गदिध के डैने वशिलकाय और दुर्जेय होते हैं।
 - इनके पंखों पर काले और भूरे रंग की प्रधानता होती है, जो ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाकों में इन्हें स्वयं को छपाने में मदद करती है।
 - मज़बूत व मुड़ी हुई चोंच और गहन दृष्टि की वशिषता के कारण गदिध, परयावरण के सबसे कुशल अपमार्जक होते हैं, जो सड़े-गले जैविक पदार्थों (वशिषकर मृत जीवों) को खाकर पारस्थितिकी तंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिते हैं।
- परयावास एवं कषेत्र:
 - हमिलयी गदिध का नाम उपयुक्त है, क्योंकि यह मुख्य रूप से हमिलय पर्वत शृंखला की ऊँची चोटियों एवं घाटियों में नविस करता है।
 - यह भारतीय मैदानी कषेत्रों में होने वाला एक सामान्य शीतकालीन परवासी है।
 - इसका वतिरण भारत, नेपाल, भूटान तथा चीन सहित कई देशों में है, जहाँ यह कठिन ऊँचाई वाली पारस्थितियों में फलता-फूलता है।
- पारस्थितिकीय महत्त्व:
 - एक शीर्ष शिकारी और सफाईकर्मी के रूप में हमिलयी गदिध जानवरों के अवशेषों का कुशलतापूर्वक नपिटान करके अपने आवास के स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिता है।
 - इसकी सफाई की प्रवृत्ति उन बीमारियों के प्रसार को रोकने में सहायता करती है जो सड़े-गले शवों के कारण उत्पन्न हो सकती हैं, इस प्रकार यह पारस्थितिकी तंत्र के समग्र संतुलन में योगदान करता है।
- चुनौतियाँ तथा संरक्षण के परयास:
 - बर्फ से ढके पहाड़ों में घोंसला बनाने की इसकी मूल प्रवृत्तिके कारण हमिलयी गदिध को कैद में प्रजनन करने से जटलिताएँ उत्पन्न हुई हैं।
 - चड्डियाघर में सफल प्रजनन लंबे समय तक कैद में रहने तथा उषणकटिबंधीय वातावरण में अनुकूलन के माध्यम से संभव हो सका।
 - नविस स्थान की हानि, भोजन की कमी एवं पशु चकित्सा दवाओं के कारण वशिषकता जैसे कारकों ने इसकी संख्या में गरीवट लाने में योगदान दिया है।
 - संरक्षण प्रजनन केंद्र, जैसे करिानी, असम गदिध संरक्षण प्रजनन केंद्र (VCBC), गदिध प्रजातियों की सुरक्षा प्रदान करने में सहायक है।



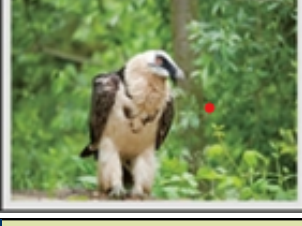


केटोप्रोफेन और एसकिलोफेनाक का गदिधों पर प्रभाव:

- केटोप्रोफेन और एसकिलोफेनाक दो प्रकार की नॉन-स्टेरायडल एंटी-इंफ्लेमेटरी दवाएँ (NSAIDs) हैं जिनका उपयोग पशुओं (वशेषकर मवेशियों) में दर्द और सूजन) के इलाज के लिये किया जाता है।
- इन दवाओं को गठिया, चोटों और सर्जरी के बाद दर्द के उपचार लिये दिया जाता है।
- जब गदिध इन दवाओं से उपचारित पशुओं के शवों को खाते हैं तो गदिधों में गुरदे की वफिलता और मृत्यु होने की संभावना बढ़ने के कारण ये दवाएँ गदिधों के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक पाई गई हैं।

भारत में गदिधों की प्रजातियाँ:

क्रम संख्या	गदिध प्रजाति	IUCN स्थिति	चित्रण
1.	ओरिएंटल वाइट-बैकड वल्चर (Gyps bengalensis)	अतसिकटग्रस्त (Critically Endangered)	
2.	स्लेण्डर-बीलड वल्चर (Gyps tenuirostris)	अतसिकटग्रस्त	
3.	लॉन्ग बीलड वल्चर (Gyps indicus)	अतसिकटग्रस्त	

4.	इजिप्शियन वल्चर (Neophron percnopterus)	संकटग्रस्त (Endangered)	
5.	रेड हेडेड वल्चर (Sarcogyps calvus)	अतसंकटग्रस्त	
6.	इंडियन ग्रफिॉन वल्चर (Gyps fulvus)	कम चिंतीय (Least Concerned)	
7.	हमिलयन ग्रफिॉन (Gyps himalayensis)	लुप्तप्राय (Near Threatened)	
8.	सनिरस वल्चर (Aegypius monachus)	लुप्तप्राय	
9.	बयिर्डेड वल्चर/लेमरगयिर (Gypaetus barbatus)	लुप्तप्राय	

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. कुछ वर्ष पहले तक गदिध भारतीय देहातों में आमतौर पर दखिाई देते थे, कति आजकल कभी-कभार ही नज़र आते हैं। इस स्थतिके लयि उत्तरदायी है: (2012)

- (a) नवीन प्रवेशी प्रजातयिों द्वारा उनके नीड़ स्थलों का नाश।
- (b) गोपशु मालकिों द्वारा रुगण पशुओं के उपचार के लयि प्रयुक्त औषधि।
- (c) उन्हें मलिने वाले भोजन में आई कमी।
- (d) उनमें हुआ व्यापक, दीर्घस्थायी तथा घातक रोग।

उत्तर: (b)

स्रोत: द हद्रि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/himalayan-vulture-gyps-himalayensis>

